Volume-3, No. II, Aug-2016, pp. 58-60

महर्षि कर्वे व्यक्तित्व एवं कृतित्व

डा0 सीमा रानी, एसोसिएट प्रोफेसर एवं
विभागाध्यक्ष शिक्षा शास्त्र विभाग,
डी.ए.के. कालिज, मुरादाबाद

सारः
अन्ना साहब कर्वे एक ऐसे त्यागी एवं निस्पृह व्यक्ति थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन दीन दुखियों को समर्पित कर दिया। नारी को साक्षात् देवी मानने वाले कर्वे ने नारी जाति के उत्थान के लिए इतना कार्य किया जितना देश के इतिहास में किसी ने नहीं किया। उन्होंने अनेक समाज सुधारकों के साथ कार्य किया। बालिकाओं के लिए स्कूल खोले। विधवा पुर्नविवाह को प्रोत्साहित किया। आदर्श शिक्षक और छात्रों के गुण बताये। उन्होंने अनेक शिक्षण संस्थाएँ, आश्रम, कर्ममठ की स्थापना के साथ–साथ एस.एन.डी.टी. विश्वविद्यालय की स्थापना की, जो अपने आप में एक बड़ा कीर्तिमान है।

मुख्य शब्दः अध्यापक, छात्र, महिला शिक्षा, महिला विद्यालय

परिचयः
शिक्षा मर्मज्ञ आचार्य कर्वे का जन्म 1858 में हुआ अपने आदर्श विद्यार्थी जीवन को जीकर 1884 में शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया। कर्तव्य जागरूक इस महान शिक्षक को 1924 में डी.लिट् की उपाधि देकर उनकी अपूर्व एवं अतुलनीय शिक्षा कौशल एवं शिक्षा दृष्टि को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित किया गया। इसके पाँच वर्ष पश्चात् उन्होंने इग्लैण्ड, जापान, फ्राँस, अमेरिका की यात्रा एक शिक्षक के रूप में की। यूँ तो इस महान शिक्षाविद् ने अपना सम्पूर्ण जीवन शिक्षा को समर्पित कर दिया, किन्तु उनकी शिक्षा का मूर्तिमान महिला विश्वविद्यालय आज भी उनके शिक्षा दर्शन को प्रचारित प्रसारित करने हेतु आज भी कार्यरत है।

अध्यापक–
शिक्षा के कार्य में शिक्षक के महत्वपूर्ण स्थान को स्वीकारते हुए यह कहना होगा कि महर्षि कर्वे भारतीय शिक्षक को भारतीय वेशभूषा में ही देखना चाहते थे क्योंकि वे स्वयं भारतीय वेशभूषा धारण किया करते थे। उनकी मान्यता थी कि शिक्षक को अपने कार्य को परिश्रम पूर्वक पूर्ण रूचि लेते हुए करना चाहिये। उनका कहना था कि एक अध्यावसायी अध्यापक ही छात्रों को परिश्रम का महत्व समझा सकता है। महर्षि कर्वे शिक्षक के मानसिक पक्ष के संबंध में तीन मुख्य विचार अपने शिक्षण जीवन में प्रदान कर सकें।

क–शिक्षक को धैर्यवान और स्थित प्रज्ञ होना चाहिये अर्थात् वो विषय परिस्थिति में जल्द से घबरा न जायें।

ख–अध्यापक अपने आपको समाज में हीन दृष्टि से न देखें। उसे धन का उपार्जन यथेष्ट करना चाहिये ताकि पारिवारिक व्यय में व्यवधान तथा असुविधा न हो। दीन हीन अध्यापक समाज को दीनता और हीनता के विचार ही दे सकेगा, ऐसे शिक्षक का समाज को क्या करना है।

ग–तीसरा मुख्य विचार उनकी जीवन चर्या से यह प्राप्त होता है कि टयूशन जिसका विरोध आज सर्वत्र किया जाता है वास्तव में कोई हेय कार्य नहीं है क्योंकि इससे न केवल कमजोर छात्र की कमी दूर होती है अपितु अध्यापक का स्वयं का मानसिक उन्नयन निरन्तर होता रहता है।

उपरोक्त विचारनुक्रम में तीन अन्य महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत करना यहाँ असंगत न होगा। वो कहते थे कि शिक्षक का व्यक्तित्व और चिंतन गहरा होना आवश्यक है क्योंकि ऐसा व्यक्तित्व ही वास्तव में छात्र को प्रभावित कर पाता है। किन्तु इसके साथ ही महर्षि जी कहा करते थे कि ऐसा विचारशील शिक्षक असामाजिक नहीं होना चाहिये और न ही स्वकेन्द्रित होना चाहिये। क्योंकि उसे तो भविष्य के समाज का निर्माण करना है इस कारण उसका समाज के साथ मिलजुलकर रहना अति आवश्यक है। ऐसा शिक्षक ही वास्तविक सामाजिक नेतृत्व प्रदान कर सकता है। तीसरे विचार के रूप में महर्षि कर्वे ने यह कहने में कोई चूक नहीं करते हैं कि शिक्षक के व्यक्तित्व की महान गुणों की सूची में यह गुण अपना विशेष स्थान रखता है कि प्रत्येक शिक्षक को सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिये। उसकी यह संवेदनशीलता अपने लिये, छात्रों के लिये तथा समाज के लिये बहुत उपयोगी हैं।

उपरोक्त छः विचारों के साथ यह दो विचार कोई कम महत्वपूर्ण नहीं है, जब वो एक शिक्षक से यह अपेक्षा रखते हैं कि शिक्षक युवा पीढ़ी को उत्साहित करने के योग्य हो तथा यह विचार कि उस शिक्षक का व्यक्तित्व इतना शक्तिशाली हो कि परम्पराओं को प्यार करने वाले साधारण जन उसकी ओर इस दृष्टि

से देख सकें कि वह उनको नई राह दिखायेगा तथा पुरानी और बेकार रीतिरिवाजों को तोड़ने का साहस रखता होगा। एक शिक्षक केवल पुस्तकों और विद्यार्थियों के लिये ही नहीं होता अपितु उसे यह ध्यान रखना चाहिये कि कोई भी छात्र आर्थिक कठिनाई के कारण शिक्षा को बन्द न कर दें। इतना ही नहीं बन पड़े तो गरीब छात्रों की आर्थिक सहायता करना उचित ही होगा। शिक्षण विधि के संबंध में उनका मत था कि एक शिक्षक की शिक्षण विधि तभी अच्छी मानी जायेगी यदि उसने नवीन ज्ञान को छात्रों तक सफलतापूर्वक पहुँचा दिया है।

छात्र

महर्षि कर्वे का विश्वास था कि छात्र को परिश्रमी भी होना चाहिये और अपने काम को रूचि लेकर पूर्ण करने वाला भी होना चाहिये। छात्र का सामान्य ज्ञान समाचार पत्रों के अध्ययन से बढ़ाया जा सकता है। वे स्वयं जब विद्यार्थी थे तो सारे काम परिश्रम पूर्वक करते थे किन्तु समाचार पत्र पढ़ने में विशेष रूचि रखते थे। एक छात्र को विनम्र तो होना ही चाहिये परन्तु स्वाभिमानी भी होना चाहिये। इससे वह छात्र बहुत से अनैतिक काम करने से बच जाता है। उनकी दृष्टि में एक छात्र वही अच्छा है जो वचन देकर उसको पूर्ण करता है। छात्र में आत्मविश्वास का होना और उसे धैर्यवान होना आवश्यक है। वही छात्र उनकी दृष्टि में अच्छा है जो हिम्मत और जोश से भरा हुआ है। महर्षि कर्वे ने एक अन्य मूल्यवान विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि ज्ञान से आदमी नेक बनता है और हर आदमी का लक्ष्य भी नेक बनना ही है। इसलिये छात्र का ज्ञान से अन्योन्याश्रित नाता है।

महिला शिक्षा एवं समाज –

अन्ना साहब कर्वे एक ऐसे त्यागी और निस्पृह व्यक्ति थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन दीन दुखियों को समर्पित कर दिया। नारी जाति के उत्थान के लिये तो इन्होंने इतना कार्य किया जितना इस देश के इतिहास में अन्य किसी ने नहीं किया।

कर्वे जी नारी को साक्षात् देवी मानते थे। वो 'यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता' के मूलमंत्र में विश्वास रखते थे। उस समय समाज में नारी शिक्षा को बड़ी नीची निगाह से देखा जाता था। उन्होंने अनेक सुधारकों के साथ काम किया। लड़कियों के लिये स्कूल खोले। कर्वे जी विधवाओं को पुर्नविवाह द्वारा उनके नारकीय जीवन से मुक्त कराना चाहते थे इसलिये उन्होंने स्वयं नरहरपेत की विधवा बहन गोदूबाई से पुर्नविवाह कर लिया।

कर्वे जी ने विधवा विवाह के लिये जनमत तैयार करने हेतु 1893 में विधवा विवाह समिति बनाई। कर्वे जी ने अनाथ बालिकाओं की शिक्षा के लिये 1896 में अनाथ बालिकाश्रम की स्थापना की। कर्वे जी तर्कसंगत और न्यायपूर्ण बातों ने रूढ़िवादी परम्पराओं को तोड़ दिया। 1908 में निष्काम कर्म मठ की स्थापना की। 1916 में महिलाओं के लिये उच्च शिक्षा हेतु महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की।

महिला विद्यालय का विश्लेषणात्मक अध्ययन–

महर्षि कर्वे ने निम्न आर्थिक वर्ग की महाराष्ट्र की स्त्रियों के स्तर एवं योगदान को बढ़ाने के लिये जो प्रशंसनीय एवं अतुलनीय प्रयास किये इसके लिये उनको साधुवाद है। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि 1974 में श्रीमति नाथी बाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठ क्रियाकलापों को महिला विश्वविद्यालय जो महर्षि कर्वे द्वारा 1916 में स्थापित किया गया एक अनुसंधान यूनिट द्वारा 1974 से लगातार मूल्यांकन किया जा रहा है। इस कार्य को सुश्री मैत्रई कृष्णराज अपने विशिष्ट योग्यता से सम्पादित कर रही है। परित्यक्ता, विधवा तथा कुवारी स्त्रियों को आर्थिक रूप से सम्पन्न करना और उनके सांस्कृतिक उत्थान द्वारा समाज के प्रति उनके योगदान को बढ़ाना यही पुनीत उद्देश्य कर्वे जी के हृदय में सदा ठाठे मारता रहता था क्योंकि महर्षि कर्वे की मान्यता थी कि भारतीय समाज का उत्थान तभी हो सकता है जब स्त्रियाँ भी उत्पादन कार्य में पुरूषों का सहयोग दे पायें। उन्होंने पाया कि इस महान उद्देश्य की प्राप्ति में सर्वप्रथम स्त्रियों का निरक्षर होना, अर्धसाक्षर होना, कौशल का ज्ञान न होना यही आड़े आते हैं। इसलिये इसको समाज का उपयोगी अंग बनाने के लिये उन्हें व्यवसायिक शिक्षा देने में अब विशेष प्रयास जुटाये जाने चाहिये। उनको पापड़ बनाना, सेवा कार्य करना, दूध और दूध से अन्य पदार्थ निर्मित करना, मुर्गी पालन इत्यादि में तकनीकी योग्यता प्रदान करनी चाहिये। यहाँ यह अंकित करना निष्प्रयोजन न होगा कि महर्षि कर्वे द्वारा संचालित यह महिला संस्थायें केवल रूढ़िवादी संस्थायें नहीं है, अपितु यह लीक से हटकर काम कर रही है क्योंकि इन संस्थाओं में निरन्तर शोध के माध्यम से नवीन विचारानुक्रम को जन्म मिलता है और उसके आधार ठोस होते हैं। इन सब अनुसंधानों का एक निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि आधुनिक भारतीय समाज में स्त्रियों को साधारण स्त्री स्तर के स्थान पर एक विषिष्ट समूह का स्थान देना होगा क्योंकि वह कोई अल्पसंख्यक उपवर्ग नहीं है वह तो सम्पूर्ण भारतीय समाज का हिस्सा है। प्रश्न केवल आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्तर का ही नहीं है। अपितु समाज में स्त्रियों को समानता और न्याय का स्थान दिलाने के लिये एक महत्वपूर्ण कदम है।

श्रीमति नाथीबाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठ द्वारा किये गये प्रयासों की विशेषता यह है कि इनमें से अधिकतर सरकार द्वारा अनुदित नहीं है तथा ये

विभिन्न योजनायें स्त्रियों द्वारा ही आर्थिक रूप से पोषित है। बराकीट महिला आर्थिक विकास महामण्डल लिमिटेड (1975) इन्द्रा सहकारी बैंक (1972) स्त्री सेवा सहकारी संघ (1973) अन्नपूर्णा मण्डल (1976)

सर्वाधिक दुखद अनुभव उस संस्था से हुआ जो महिलाओं को धन सरलता से अनुदान रूप में देती है। ध्यान देने योग्य है कि वे स्त्रियाँ जो व्यावसायिक शिक्षा पाने पर व्यवसाय में लग जाती हैं उन पर घरेलू कार्यभार अधिक हो जाता है। उनका आर्थिक शोषण भी किया जाता है। क्योंकि वे मजबूरी में ही तो व्यवसाय में लगने के लिये मजबूर होती है और साथ ही यह भी दर्शनीय है कि व्यावसायिक कार्य में लगने के बाद उनका स्तर कुछ ऊँचा उठ जाता है। पुनश्च निम्न तकनीकी की योग्यता उनके द्वारा किये जाने वाले उत्पादन कार्यों की कुशलता को प्रभावित करती है ये स्त्रियाँ साक्षरता के लिये समय नहीं निकाल पाती है तथा इनका दृष्टिकोण है कि जब बिना साक्षरता के ही काम चल जाता है तो क्यों पढ़ा लिखा जाये। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि अच्छे परिणाम लेने है तो इन महिलाओं का पढ़ा होना आवश्यक है। उत्पादित वस्तु की बिक्री की समस्या इन संस्थाओं की विशिष्ट समस्या है। जातिवाद से अभी भी स्त्रियाँ पीड़ित है। यू. एन. एशियन और पैसीफिक सेन्टर फॉर वुमैन एण्ड डेवलपमेंट ने एक संदर्भ पुस्तक तैयार की है जिसमें स्त्री संबंधी अनेक योजनाओं के उद्देश्य एवं क्रियाविधि को अंकित किया गया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि जो संस्था अति विनम्र सेवा भाव से स्त्रियों के उत्थान के लिये शुरू की गई थी अब निरन्तर पुष्पित और पल्लवित होती जा रही है क्योंकि योजना की कमियों पर भी उतना ही ध्यान दिया जा रहा है जितना उसकी सफलताओं पर प्रसन्नता का अनुभव किया जा रहा है। यही दृष्टिकोण किसी संस्था को अनुप्राणित करता रहता है क्योंकि व्यक्ति और वाद तो किसी भी संस्था या आन्दोलन को अन्ततः सड़न प्रदान करते हैं। विकासोन्मुख होने के लिये तो निश्चय ही तर्कपूर्ण विश्लेषण अति आवश्यक है।

कर्वे जी नारी को समाज का महत्वपूर्ण अंग मानते थे। नारी शिक्षा एवं नारी के सामाजिक उत्थान के लिये कर्वे ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य किये–

1. 1893 विधवा विवाह समिति बनाई।
2. 1896 अनाथ बालिकाश्रम की स्थापना।
3. 1908 निष्काम कर्ममठ की स्थापना।
4. 1916 महिला विश्वविद्यालय की स्थापना।

महर्षि कर्वे स्त्रियों को पुरूषों के समान स्वतन्त्रता तथा अधिकार देने के पक्ष में थे क्योंकि उनका कहना था समाज में तो दोनों को मिलकर चलना होता है। स्त्रियों को देश के उत्पादन कार्य में भागीदार होना चाहिये। स्त्रियों को व्यवसायिक एवं शैक्षिक ज्ञान देकर इस योग्य बनाया जायें कि वो अपनी मदद स्वयं कर सकें। अपने से सम्बन्धित संस्थाओं को उन्हें स्वयं चलाना आना चाहिये। तभी स्त्री विकासोन्मुख हो सकती है।

सन्दर्भ सूची

1. अब्बासी, ए.एन.एम.एस. (1980) : ''दा एजूकेशनल थोट्स आफ जवाहर नेहरू'' पी.एच.डी., गुजरात
2. अमूदा (1983) ''साई माई रैडीमर''
3. बाबू एस. (1978) ''ए स्टडी आफ श्री अरविन्दोज़ फिलोसफी आफ एजूकेशन, पी.एच.डी., फिल, एस.बी.यू.
4. बॉके, एस.एम. (1983) ''एजूकेशनल फिलोसफी आफ लोकमान्य तिलक एवं स्वामी विवेकानंद, एक तुलनात्मक अध्ययन''
5. भट्ट, जे.एम. (1973) ''ए स्टडी आफ दा एजूकेशनल फिलोसफी आफ विनोबा भावे'' पी.एच.डी. एजूकेशन
6. बुच, एन.बी. (1974) ''सैकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'' पृष्ठ 25–49
7. बुच, एन.बी. (1974) ''सैकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'' पृष्ठ 32–55
8. चारू, एच.के. (1971) ''दा एजूकेशन फिलोसफी ऑफ भागवत गीता'' पी.एच.डी. एजूकेशन, बम्बई विश्वविद्यालय
9. ग्रेवर, एफ.पी., ''ए हिस्ट्री ऑफ एजूकेशनल पृष्ठ 68–69
10. कोठारी डी.एस. (1964–66) ''एजूकेशन एवं नेशनल डैवलपमेंट रिपोर्ट आफ दा एजूकेशनल कमीशन, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
11. ओशो रजनीश (1989) ''रिवेल्यूशन इन एजूकेशन (हिन्दी), दा रीबल पब्लिशिंग हाउस, पूना
12. रमेश सी. (1982) थियोरी एंड प्रैक्टिस ऑफ एजूकेशन इन हरबंत रोड, पी.एच.डी. एजूकेशन, ओ.एस.एम. यूनीवर्सिटी
13. सेठ के.डी. (1953), आइडियलिसटिक ट्रेंडस इन इण्डियन फिलोसफर्स ऑफ एजूकेशन, पी.एच.डी. एजूकेशन, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
14. बैकिल, के.एस. (1966) ''एजूकेशन इन इण्डिया, एलाइन पब्लिशर, नई दिल्ली।